R.N.I. No. : DELBIL / 2001/4685 Postal regn. No. : A.L.G. / 29 / 2021-23

मूल्य-7 रुपये, वर्ष-23, अङ्क-11-12 दिसम्बर 2023 1

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट (रजि.), अलीगढ़ (उ०प्र०) का
मासिक मुख समाचार पत्र

मङ्गलायतन

(संयुक्तांक - नवम्बर-दिसम्बर 2023)

तीर्थधाम चिदायतन के वेदी शिलान्यास के अवसर पर
विराजित भगवान श्री आदिनाथ

तीर्थधाम मङ्गलायतन में आयोजित

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर की झलकियाँ

मङ्गलायतन

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट (रजि.), अलीगढ़ (उ.प्र.) का

मासिक मुखपत्र

वर्ष-23, अङ्क-11-12 (वी.नि.सं. 2550; वि.सं. 2080) नवम्बर-दिसम्बर 2023

अब के ऐसी दिवाली मनाऊँ.....

अबके ऐसी दिवाली मनाऊँ, कबहूँ फेर न दुःखड़ा पाऊँ ।टेक ॥

आन कुदेव कुरीति छाँड़ के, श्री महावीर चितारूँ।
राग-द्वेष का मैल जलाकर, उज्ज्वल ज्योति जगाऊँ॥
अपनी मुक्ति-तिया हर्षाऊँ, अबके ऐसी दिवाली मनाऊँ ॥1 ॥

निज अनुभूति महालक्ष्मी का, वास हृदय करवाऊँ।
निजगुण लाभ दोष टोटे का, लेखा ठीक लगाऊँ॥
जासो फेर न टोटा पाऊँ, अबके ऐसी दिवाली मनाऊँ ॥2 ॥

ज्ञान-रतन के दीप में, तप का तेल पवित्र भराऊँ।
अनुभव ज्योति जगा के, मिथ्या अंधकार बिनसाऊँ॥
जासों शिव की गैल निहारुँ, अबके ऐसी दिवाली मनाऊँ ॥3 ॥

अष्ट करम का फोड़ फटाका, विजयी जिन कहलाऊँ।
शुद्ध बुद्ध सुखकंद मनोहर, शील स्वभाव लखाऊँ॥
जासों शिवगोरी बिलसाऊँ, अबके ऐसी दिवाली मनाऊँ ॥4 ॥

साभार : मंगल भक्ति सुमन

संस्थापक सम्पादक
स्व. पण्डित कैलाशचन्द्र जैन, अलीगढ़
स्व. श्री पवन जैन, अलीगढ़
सम्पादक
डॉ. जयन्तीलाल जैन, मङ्गलायतन वि०वि०
सह सम्पादक
डॉ. सचिन्द्र शास्त्री, मङ्गलायतन
सम्पादक मण्डल
बाल ब्रह्मचारी हेमन्तभाई गाँधी, सोनगढ़
डॉ. राकेश जैन शास्त्री, नागपुर
श्रीमती बीना जैन, देहरादून
सम्पादकीय सलाहकार
पण्डित विमलदादा झाँझरी, उज्जैन
श्री चिरंजीलाल जैन, भावनगर
श्री प्रवीणचन्द्र पी. वोरा, देवलाली
श्री वसन्तभाई एम. दोशी, मुम्बई
श्री श्रेयस् पी. राजा, नैरोबी
श्री विजेन वी. शाह, लन्दन
मार्गदर्शन
डॉ. किरीटभाई गोसलिया, अमेरिका
पण्डित अशोक लुहाड़िया, मङ्गलायतन

क्या - कहाँ

चरणानुयोग	शासननायक का	5
द्रव्यानुयोग	समयसार नाटक	12
	स्वानुभूतिदर्शन :	16
प्रथमानुयोग	हस्तिनापुर का अतिशयकारी	18
करणानुयोग	जानिये अघातिया कर्मों की	20
प्रथमानुयोग	कवि परिचय	22
करणानुयोग	श्रुत परम्परा एवं श्रुतज्ञान	25
द्रव्यानुयोग	जिस प्रकार-उसी प्रकार	28
	समाचार-दर्शन	29

शुल्क :
एक प्रति : 07.00 ₹
आजीवन (15 वर्ष) : 1000.00 ₹

चरणानुयोग

(बहिनश्री के वचनामृत क्रमाङ्क 432 पर सत्पुरुषश्री कानजीस्वामी का प्रवचन)

शासननायक का अनन्त उपकार

दीपावली एक पावन पर्व है। यह चौबीसवें तीर्थङ्कर श्री महावीर भगवान के मोक्षकल्याणक का पावन दिवस है।

कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी की पिछली रात्रि में इस भरतक्षेत्र के अन्तिम तीर्थङ्कर श्री महावीर भगवान, पावापुरी में समश्रेणी से मोक्ष पधारे और कार्तिक कृष्णा अमावस्या के प्रात:काल स्वर्ग लोक से आकर इन्द्रों तथा देवों ने निर्वाणकल्याणक-महोत्सव मनाया। उस उत्सव के प्रतीकरूप में लोग आज के दिन 'दीपावली पर्व' मनाते हैं।

प्रश्न : आज वीर निर्वाण दिन के अवसर पर दो शब्द कहिये।

उत्तर : श्री महावीर तीर्थाधिनाथ, आत्मा के पूर्ण अलौकिक आनन्द में और केवलज्ञान में परिणमित थे।

महावीर का जीव पहले पुरुरवा नामक भील था, उसी भव से उसका सुधार प्रारम्भ हो गया था; बीच में दूसरे अनेक भव किये थे। अन्तिम भव में भरतक्षेत्र के मगधदेश की कुण्डलपुरी में सिद्धार्थ राजा की रानी त्रिशलादेवी के गर्भ से चौबीसवें तीर्थङ्कर के रूप में अवतरित हुए थे। पुरुरवा, भीलों का राजा था। वन में एक मुनि ध्यानस्थ बैठे थे। दूर से उनको मृग मानकर पुरुरवा, बाण छोड़ने की तैयारी में था, तभी उसकी पत्नी ने कहा : यह तो कोई महान सन्त — मुनिराज हैं। भील ने बाण रख दिया और मुनिराज के पास जाकर भक्तिपूर्वक वन्दन किया। मुनिराज का उपदेश सुनकर मद्य, माँस और मधु का त्यागव्रत धारण कर लिया; वह तो शुभभाव था, धर्म नहीं था। वहाँ से उसके सुधार का प्रारम्भ हुआ। वहाँ से मरकर वह देव होता है, पश्चात् क्रमश: अनेक भव करके सिंह का भव धारण करता है। यह भव 'महावीर' होने से पहले का दसवाँ भव है।

एक बार वह सिंह, हिरन को फाड़कर खा रहा था, तब आकाश में से दो चारणऋद्धिधारी मुनिवर उतरते हैं और सिंह को सम्बोधित करते हैं कि—

'हे वनराज! तुम यह क्या कर रहे हो? हमने तो भगवान के पास सुना है कि तुम दसवें भव में महावीर तीर्थङ्कर होनेवाले हो। नरकगति में ले जानेवाली ऐसी घोर हिंसा तुम्हें शोभा नहीं देती। सच्चिदानन्द प्रभु आत्मा भीतर विराजमान है, उसे अन्तर में दृष्टि डालकर ग्रहण करो! उसकी अनुभूति करो! सम्यक्त्व प्राप्त करने का तुम्हारा अवसर आ गया है।'

अहा, देखो! भीतर उपादान तैयार होता है, तब प्राकृतिक ही निमित्त का योग कैसा मिल जाता है! मुनिराज की भाषा कैसी होती है? भाषा भले ही चाहे जैसी हो परन्तु उसका भाव बराबर समझ गया। उपदेश सुनते हुए सिंह की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी और अन्तर्मुख-दृष्टिपूर्वक वह सिंह, सम्यग्दर्शन एवं निर्विकल्प स्वानुभूति प्राप्त कर लेता है। अरे! अभी तो पंजों के नीचे मारा हुआ हिरन पड़ा है, पेट में भी माँस चला गया है — ऐसी स्थिति में भी जीव उन सबसे अपनी परिणति हटाकर, अन्तर में पुरुषार्थपूर्वक साधना का कार्य कर लेता है! **अहा! जहाँ अन्तरङ्ग पात्रता हो, वहाँ निमित्त का योग सहज ही बन जाता है। निमित्त मिलाना नहीं पड़ते और निमित्त से कार्य भी नहीं होता।** सिंह की अपनी उपादानभूत तैयारी हुई, वहाँ आकाशमार्ग से जाते हुए मुनिवर उस घने जंगल में उतरे और कहा कि — हे मृगराज! तुम भगवान हो, जिनस्वरूप हो।

घट घट अन्तर जिन बसे, घट घट अन्तर जैन;
मत मदिरा के पान सों, मतवाला समुझै न।
जिन सोही है आतमा, अन्य होई सो कर्म;
कर्म कटै सो जिनवचन, तत्त्वज्ञानी को मर्म।

— प्रभु! तू जिन है न! वीतरागमूर्ति भगवान है न! — इतना सुनते ही सिंह अन्तर में उतर गया और सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लिया। आँखों से अश्रुधारा बहती है और अन्तर में अशुद्धता की धारा अंशतः लुप्त हो जाती

है–नष्ट हो जाती है तथा स्वानुभूतियुक्त शुद्धता की धारा प्रवाहित होती है।

साधन की अविच्छिन्न धारासहित महावीर का जीव, सिंहपर्याय छोड़कर बीच में देव और मनुष्य के पाँच भव करके धातकीखण्ड के पूर्व विदेहक्षेत्र में चक्रवर्ती का भव धारण करता है; तत्पश्चात् पूर्व तीसरे भव में जम्बूद्वीप में नन्दराजा होता है और मुनिदशा धारण करके तीर्थङ्करनामकर्म बाँधता है। वहाँ से सोलहवें स्वर्ग में अच्युतेन्द्ररूप से बाईस सागर की आयु पूर्ण करके, जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में मगधदेश की कुण्डलपुरी के राजा सिद्धार्थ की रानी त्रिशलादेवी के गर्भ में आषाढ़ शुक्ल छठवीं के दिन आते हैं और देव, गर्भकल्याणक का महान उत्सव मनाते हैं। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन जन्मकल्याणक; तीस वर्ष की आयु में कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी की रात्रि के पिछले प्रहर में निर्वाणकल्याणक — यह पाँचों कल्याणक इन्द्रों और देवों ने स्वर्ग से मध्यलोक में आकर अति आनन्दोल्लासपूर्वक मनाये थे। कार्तिक कृष्णा अमावस्या के दिन वीरनिर्वाण का महामहोत्सव हुआ। श्री महावीर तीर्थाधिनाथ, आत्मा के पूर्ण अलौकिक आनन्द में तथा केवलज्ञान में परिणमते थे।

सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान होने पर चतुर्थ गुणस्थान में सिद्ध की जाति का अलौकिक अतीन्द्रिय आनन्द प्रगट होता है परन्तु वह अति अल्प है, और जब यथार्थ दिगम्बर मुनिपना प्रगट होता है, तब अन्तर में स्वरूपस्थिरता की अत्यन्त वृद्धि हो जाने से, उस अलौकिक आनन्द का प्रचुर स्वसंवेदन होता है, तथापि अभी आनन्द पूर्ण प्रगट नहीं हुआ है। पूर्ण अलौकिक आनन्द तो केवलज्ञानदशा — चारों घातिकर्मों का क्षय होने पर अनन्त चतुष्टयरूप अरहन्तदशा प्राप्त हो, तब प्रगट होता है। चतुर्थ गुणस्थान में अंशतः आनन्द; छठवें–सातवें में प्रचुर आनन्द; बारहवें में वीतराग-आनन्द; तेरहवें में क्षायिक अनन्त आनन्त और सिद्ध में क्षायिक अव्याबाध आनन्द होता है।

वीरप्रभु पूर्ण आनन्द प्राप्त करने से पूर्व प्रचुर स्वसंवेदनस्वरूप मुनिदशा में थे। अहा! मुनिदशा किसे कहें! जो अन्तर्बाह्य निर्ग्रन्थ सन्त परमशुद्धोपयोगभूमिका को प्राप्त हों, उन्हें मुनि कहते हैं। वर्तमान में तो दिगम्बर साधु होकर कहते हैं कि इस पञ्चम काल में शुद्धोपयोग नहीं होता, मात्र शुभोपयोग होता है। अरे भाई! साधु होकर तू यह क्या कहता है? वर्तमान पञ्चम काल में यदि मात्र शुभोपयोग ही हो तो क्या धर्म नहीं है? भगवान कुन्दकुन्दाचार्यदेव ने तो 'पञ्चम काल में धर्मध्यानरूप शुद्धोपयोग होता है' — ऐसा मोक्षप्राभृत में कहा है —

अज्ज वि तिरयणसुद्धा अप्पा झाऊण जंति सुरलोए।
लोयंतियदेवत्तं तत्थ चुआ णिव्वुदिं जंति॥77॥

(अर्थात् आज भी त्रिरत्न से शुद्ध जीव, आत्मा को ध्याकर स्वर्गलोक को प्राप्त होते हैं व लौकान्तिक में देवपना प्राप्त करते हैं; वहाँ से च्युत होकर मोक्ष जाते हैं।)

प्रवचनसार में कहा है कि सच्चे भावलिङ्गी आचार्य, उपाध्याय और साधु—सब परम शुद्धोपयोग भूमिका को प्राप्त होते हैं। भूमिकानुसार व्रतादि के विकल्प आते हैं परन्तु वे हेयरूप से वर्तते हैं, उनको वे विशेष स्वरूपस्थिरता द्वारा लाँघ जायेंगे।

आज उन ने सिद्धदशा प्राप्त की।

वीरप्रभु ने प्रचुर आनन्द के संवेदनरूप शुद्धोपयोगदशा को प्राप्त करके, साढ़े बारह वर्ष की उग्र स्वरूपसाधना के पश्चात् केवलज्ञान प्राप्त किया। पूर्ण आनन्द तथा केवलज्ञानपरिणति को प्राप्त वीरप्रभु ने दिव्यध्वनि द्वारा तीस वर्ष तक धर्म-प्रवर्तन के पश्चात्, आज-कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी की रात्रि के पिछले प्रहर में सिद्धदशा प्रगट की।

अरे..रे! लोगों ने वर्तमान में मार्ग में बहुत गड़बड़ी कर दी है। त्रिलोकीनाथ सर्वज्ञ परमात्मा का दिव्यध्वनि में कथन है कि — जहाँ परमात्मदशा प्रगट होती है, वहाँ आत्मा के पूर्ण अलौकिक आनन्द एवं

केवलज्ञानरूप परिणमन होता है। उन केवलज्ञानी परमात्मा की देहमुद्रा नग्नदशारूप होती है। अरे! जो सच्चे भावलिङ्गी सन्त हैं, उनको भी वस्त्र नहीं होते, तब केवली परमात्मा को वस्त्र कैसे होंगे? वीरप्रभु ने प्रथम प्रचुर स्वसंवेदनयुक्त नग्नदशारूप वीतराग मुनिपना अङ्गीकार किया, पश्चात् पूर्ण अलौकिक आत्मिक आनन्दयुक्त केवलज्ञान प्राप्त हुआ और आज अशरीरी सिद्धदशा प्रगट की।

चैतन्यशरीरी भगवान आज पूर्ण अकम्प होकर अयोगीपद को प्राप्त हुए, चैतन्य पिण्ड पृथक् हो गया, स्वयं पूर्ण चिद्रूप होकर चैतन्यबिम्बरूप से सिद्धालय में विराज गये; अब सदा समाधिसुख-आदि अनन्त गुणों में परिणमन करते रहेंगे।

भगवान आत्मा तो ज्ञानशरीरी है। यह दृश्यमान शरीर तो मिट्टी का पुतला, जड़, अचेतन, धूल है। अरे! पुण्य-पाप के भाव हैं, वह भी कार्मणशरीर की झिलमिलाहट है; आत्मा का स्वरूप नहीं है। पूर्णानन्द और केवलज्ञानस्वरूप चैतन्यशरीरी महावीर प्रभु ने आज पूर्ण अकम्प होकर अयोगीपद — चौदहवाँ गुणस्थान प्राप्त किया। अ, इ, उ, ऋ, लृ — इन पाँच ह्रस्व स्वरों के उच्चार जितने समय के पश्चात् तुरन्त ही चैतन्यपिण्ड, शरीर से पृथक् होकर उसी समय पावापुरी की समश्रेणी में उनका शुद्धात्मा ऊर्ध्वगमन करके लोक के अग्रभाग में अवस्थित हो गया — पूर्ण अशरीरी चिद्रूप होकर केवल चैतन्यबिम्बरूप से सिद्धालय में विराज गया; अब वहाँ सादि-अनन्त काल तक समाधिसुखादि अनन्त गुणों में परिणमन करता रहेगा। श्रीमद् ने अपूर्व अवसर में कहा है न! कि —

पूर्व प्रयोगादि कारण के योग से,
ऊर्ध्वगमन सिद्धालय प्राप्त सुस्थित जो;
सादि-अनन्त अनन्त समाधि सुख में
अनन्त दर्शन ज्ञान अनन्त सहित जो। अपूर्व०

सिद्धभगवान, सादि-अनन्त काल क्या करते हैं ? — तो कहते हैं कि क्षायिक अनन्त समाधि, शान्ति, सुख, ज्ञान, दर्शन, वीर्य आदि अनन्त गुणों की परिपूर्ण पर्यायरूप से निरन्तर परिणमन करते रहते हैं। यहाँ संसार में भी जीव और क्या कर सकता है ? क्या शरीर, वाणी अथवा स्त्री-पुत्रादि का कुछ कर सकता है ? नहीं; मात्र असमाधि, अशान्ति और दुःख इत्यादिरूप से परिणमित होता रहता है। वीरप्रभु अब सादि-अनन्त समाधिसुखादि अनन्त गुणों की पूर्ण पर्यायोंरूप से निरन्तर परिणमित होते रहेंगे।

आज भरतक्षेत्र से त्रिलोकीनाथ चले गये, तीर्थङ्कर भगवान का वियोग हुआ, वीरप्रभु का आज विरह पड़ा।

वृषभदेव भगवान, कैलाश-अष्टापद-पर्वत से मोक्ष पधारते हैं तब 'अरे ! भरतक्षेत्र में साक्षात् भगवान का वियोग हुआ' — ऐसे विरहवेदन से भरतचक्रवर्ती के नेत्रों से अश्रुधारा प्रवाहित होती है। सौधर्म इन्द्र कहते हैं — अरे मित्र भरत ! यह विलाप कैसा ! तुम भी चरमशरीरी हो, इसी भव में भगवान के समान मुक्ति प्राप्त करनेवाले हो।

भरत खिन्न हृदय से कहते हैं — हे इन्द्र ! सुनो ! हमें अपना पता है, इसी भव में हमारा मोक्ष निश्चित है, तथापि वर्तमान में हमारी भूमिका ऐसी है, जिससे भगवान के विरह की वेदनारूप प्रशस्तराग आ जाता है। भगवान के प्रति जो भाव है, वह भी शुभराग है; धर्म नहीं, तथापि जब तक वीतरागदशा न हो, तब तक ऐसा प्रशस्तराग, सम्यक्त्वी तो क्या — मुनि को भी आये बिना नहीं रहता परन्तु है वह बन्ध का कारण; शुभाशुभरहित शुद्धभाव, एक ही मोक्ष का कारण है। यहाँ कहते हैं कि त्रिलोकीनाथ वीरप्रभु भरतक्षेत्र छोड़कर चले गये, तीर्थङ्कर सूर्य अस्त हो गया, साक्षात् अरहन्त तीर्थङ्कर परमात्मा का विरह पड़ा।

इन्द्रों ने ऊपर से उतरकर आज निर्वाण महोत्सव मनाया।

प्रथम स्वर्ग का सौधर्म इन्द्र और उसकी शची इन्द्राणी — दोनों आत्मज्ञानी तथा एकावतारी होते हैं। शची का जीव जब देवी की पर्याय में

उत्पन्न हुआ, तब मिथ्यादृष्टि था क्योंकि सम्यग्दृष्टि जीव, स्त्रीपर्याय में उत्पन्न नहीं होता — ऐसा आगमोक्त नियम है। सौधर्म इन्द्र को अपनी दो सागरप्रमाण आयु काल में असंख्य तीर्थङ्करों के पञ्च कल्याणक मनाने का सौभाग्य प्राप्त होता है। दो सागर में पाँच भरत और पाँच ऐरावत क्षेत्र में असंख्य तीर्थङ्कर नहीं होते,परन्तु पाँच विदेह में, वहाँ तीर्थङ्करों की उत्पत्ति का प्रवाह अविच्छिन्न होने से, होते हैं।

अहा! बत्तीस लाख विमानों के स्वामित्ववाला और असंख्य देवों का लाड़ला प्रथम स्वर्ग का सौधर्म इन्द्र और उसके साथ अन्य स्वर्गों के इन्द्र तथा असंख्य देवादि ने स्वर्गलोक से उतरकर पावापुरी में आज के दिन श्री महावीरप्रभु का निर्वाण महोत्सव मनाया था।

देवों द्वारा मनाया गया वह निर्वाणकल्याणक महोत्सव कैसा दिव्य होगा ?

अहा ! जिसे स्वर्ग से आकर देव और इन्द्र मनाते हों, उस महोत्सव की दिव्यता का तो क्या कहना !

उसका अनुसरण करके आज भी लोग प्रतिवर्ष दिवाली के दिन दीपमाला प्रज्वलित करके दीपावली महोत्सव मनाते हैं।

देवों द्वारा मनाये गये महावीर निर्वाण-महोत्सव का अनुसरण करके आज भी लोगों में दीपमालाएँ प्रज्वलित करके तथा आतिशबाजी द्वारा दीपोत्सव महोत्सव मनाने की प्रथा चली आ रही है।

आज वीरप्रभु मोक्ष पधारे।

2504 वर्ष पूर्व कार्तिक कृष्णा अमावस्या के प्रात:काल, अर्थात् कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी के पिछले प्रहर में इस भरतक्षेत्र के चौबीसवें / चरम तीर्थङ्कर श्री महावीर भगवान, मगध देश की पावापुरी से मोक्ष पधारे।

गणधरदेव श्री गौतमस्वामी तुरन्त ही अन्तर में गहरे उतर गये और वीतरागदशा प्राप्त करके केवलज्ञान प्राप्त किया।

क्रमश:

द्रव्यानुयोग

श्री समयसार नाटक पर पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के धारावाही प्रवचन

कर्त्ता कर्म क्रिया द्वार प्रवचन

मिथ्यात्व अंधकूप के समान है। चैतन्य ज्ञानज्योति को भूलकर अपने को पर का कर्त्ता मानना महा मिथ्यात्व है। पर की दया का भाव हो, वह तो एक विकल्प है; परन्तु मैं पर की दया कर सकता हूँ; दया ही मेरा कर्तव्य है- ऐसा जो मिथ्यात्वभाव है, वह दु:ख का दूत है। मिथ्यात्वभाव जीव का स्वभाव नहीं है, इसलिए वह परद्रव्य स्वरूप है। परद्रव्य तो पर है ही; परन्तु राग-द्वेष भाव भी जीव का स्वभाव नहीं होने के परद्रव्यरूप है। वस्तुत: तो एक अंश है वह भी लक्ष्य करने के लिए परद्रव्य स्वरूप है। अबंधस्वरूप प्रभु तो आनंदघन है। ऐसे आत्मा की दृष्टि हो तो राग-द्वेष-अज्ञान की दृष्टि नष्ट हो जाती है और दु:ख दूर होकर आनन्द की प्राप्ति होती है।

अभी तो ऐसी बात सुनने को मिलना भी कठिन है। अच्छे काल में (चौथे काल में) आत्मा के अनुभवी और मुनि तो आत्मा के आनन्द में झूले झूलते हैं, क्षण में आत्मा में लीन हो जाते हैं। मुनि स्थविरकल्पी हो या जिनकल्पी (एकलविहारी) हो- दोनों प्रकार के मुनि नग्न होते हैं, जंगलवासी होते हैं और अपने आत्मा के आनन्द का झूला झूलनेवाले होते हैं। दोनों निर्ग्रन्थ होते है। अन्तर मात्र इतना है कि-

'जो मुनि संगति में रहे, स्थविरकल्पी सो जान।
एकाकी जाकी दशा, सो जिनकल्पी बखान॥

जिनकल्पी मुनि अकेले विचरण करते हैं और स्थविरकल्पी मुनि संघ में रहते हैं। इतना ही दोनों में अन्तर है। वैसे तो दोनों समान निर्ग्रन्थ दिगम्बर जंगलवासी मुनि हैं। उनके शरीर पर एक वस्त्र का धागा भी नहीं होता। जो वस्त्र रखकर मुनिपना मानता है, वह मिथ्यादृष्टि निगोद में जाता है।

भगवान आत्मा अकेली ज्ञान की क्रिया करनेवाला है। आत्मा को राग

की क्रिया वाला माननेवाला मिथ्यादृष्टि है। ऐसा मिथ्यात्व छूटे बिना समकित नहीं होता और समकित होने के पश्चात् विशेष आनन्द की लहर आये बिना अव्रतीपना नहीं छूटता।

'एसौ मिथ्याभाव लग्यो जीव कौ अनादि कौ'– निगोद से लेकर नौवें ग्रैवेयक तक के जीवों के अनादि से मिथ्यात्वभाव लगा है । नौवें ग्रैवेयक तो जीव कब जाता है कि जब उसने नग्न दिगम्बर मुनिपना पालन किया हो; परन्तु देह की क्रिया मैं करता हूँ, महाव्रत के विकल्प मेरे हैं और उनसे मुझे धर्म होता है –ऐसा मिथ्यात्वभाव उसने छोड़ा न हो। वस्त्र धारण करके मुनिपना माननेवाला तो द्रव्यलिंगी मुनि भी नहीं है, कुलिंगी है। वह तो नौवें ग्रैवेयक तक जा ही नहीं सकता; परन्तु जो द्रव्यलिंगी है, अट्ठाईस मूलगुण बराबर पालता है वह नौवें ग्रैवेयक में जाता है; परन्तु उसने पंच महाव्रतादि के परिणाम में ही धर्म मानकर मिथ्यात्व को ही पुष्ट किया है। विकल्प तो आस्रव है। उसमें धर्म मानकर मिथ्यादर्शन शल्य को पुष्ट किया है।

'याही अहंबुद्धि लिए नानाभाति भयो है'– अपने त्रिकाल ज्ञायक–स्वभाव को भूलकर अज्ञानी ने अंश में, विभाव में, पर में –इस प्रकार अनेक जगह अपनापन मानकर अनेक अवस्थायें धारण की हैं। मैं मनुष्य हूँ, मैं देव हूँ, मैं पुण्य करनेवाला हूँ, मैं दया पालनेवाला हूँ –ऐसे अनेकप्रकार के मिथ्यात्वभाव का सेवन करते हुए अनेक अवस्थाओं को धारण करता है।

'काहू समै काहू कौ मिथ्यात अंधकार भेदि, ममता उछेदि सुद्धभाव परिनयौ है'– किसी समय कोई जीव पर में, राग में और एक अंश में अहंबुद्धि छोड़ दे कि परद्रव्य तो पर है, मैं उसके कार्य का कर्त्ता नहीं हूँ, राग भी मेरा स्वरूप नहीं है और एक समय की पर्याय तो अंश है, उसमें मैं सम्पूर्ण नहीं आता – ऐसा समझकर, परद्रव्य आदि में से ममत्वभाव हटाकर शुद्धभावरूप परिणमन करे तो वह भेदविज्ञान धारण करके बंध के कारणों को दूर करके, अपनी आत्माशक्ति से संसार जीत लेता है। अर्थात् मुक्त हो जाता है।

लोगों को अभी मिथ्यात्व और सम्यक्त्व का ही पता नहीं है, वहाँ चारित्र

तो दूर ही रह जाता है। चारित्रवंत को तो गणधरदेव भी नमस्कार करते हैं। 'णमो लोए सव्व साहूणं' में समस्त चारित्रवंत मुनिराजों को नमस्कार आ जाता है।

यहाँ कहते हैं कि जब कोई जीव पर में से अंहबुद्धि छोड़े.. अरे! मैं पर में नहीं हूँ, पर का कार्य मेरा नहीं है; दया, दान, व्रत का विकल्प मेरा नहीं है। मैं तो सत् चिदानन्द ध्रुव भगवान हूँ। सिद्ध भगवान की जो पर्याय है, वैसी अनन्त पर्यायों का पिण्ड मैं हूँ। मेरे आत्मा में अपरिमित-अमर्यादित अनन्त-अनन्त ज्ञान-दर्शन, आनंदादि शक्तियाँ पड़ी हैं। शरीर, वाणी, मन, स्त्री, पुत्र, परिवार, देव, गुरु, शास्त्र- ये सब परद्रव्य हैं, मेरी वस्तु नहीं। मेरे अन्दर में पुण्य-पाप का विभाव उत्पन्न होता है, वह भी मेरा नहीं है; वह तो आस्रवतत्त्व है, बंध का कारण है, वह मैं नहीं हूँ। मेरे में ज्ञानादि के अल्प क्षयोपशमवाली पर्याय है, उतना भी मैं नहीं हूँ। मैं तो अनन्त गुणमय वस्तु हूँ -ऐसा जब अनुभव करता है, तब उसके मिथ्यात्व अंधकार का नाश होकर शुद्धभाव का प्रकाश होता है।

एक ज्ञानगुण में अनंती ज्ञानगुण की पर्यायें पड़ी हैं, एक श्रद्धागुण में अनंत श्रद्धा पर्यायें पड़ी हैं, एक चारित्रगुण में अनंत चारित्र पर्यायें पड़ी हैं, एक आनंदगुण में अनंत आनंद पड़ा है। एक समय में ऐसे अनन्तगुणों का स्वामी मैं 'आत्मा' एक समय की पर्याय जितना नहीं अथवा एक गुण जितना भी मैं नहीं हूँ।

'ममता उछेदि सुद्धभाव परिनयौ है' -इसमें बहुत सार भर दिया है। अनन्त गुणरूप एक वस्तु में दृष्टि जाने से अन्य सब ममत्व छूट जाता है। निमित्त मैं हूँ, राग मैं हूँ- ऐसी समस्त मिथ्याबुद्धि का अभाव हो जाता है। पुण्य-पाप विकल्प तो अशुद्धभाव है। भगवान आत्मा की दृष्टि होने पर ये अशुद्धभाव छूटकर आत्मा में शुद्धभाव की दशा उत्पन्न होती है। यह शुद्धभाव की दशा धर्म है।

बापू! यह तेरे घर की अलौकिक बात है। तू आजतक कभी निजघर में

नहीं आया। अब 'निजघर' में आ जा! तूने पर घर में अहंबुद्धि धारण करके तो अनेक अवस्थाये धारण की है 'पर घर फिरत बहुत दिन बीते, नाम अनेक धराये... हम तो कबहू न निज घर आये...। मैं दया का पालनेवाला, मैं भक्ति करनेवाला, मैं परिवार को पालनेवाला, मैं देश की सेवा करनेवाला– इसप्रकार जीवों ने अनेक प्रकार के मिथ्यात्वभाव का सेवन करके अनेक पर्यायें धारण की हैं– 'नानाभाँति भयो है।'

'तिनहीं विवेक धारि बंध को विलास डारि, –जिसने राग और विकल्प से भिन्न पड़कर तथा अल्पज्ञपने का लक्ष्य छोड़कर अपने स्वरूप को दृष्टि में लेकर विवेक अर्थात् भेदज्ञान किया है, उसने बंध का विलास अर्थात् बंध के कारणों को दूर किया है। मिथ्यात्व परिणाम, अव्रत परिणाम, व्रत के विकल्प, कषाय भाव, प्रमादभाव– ये सब बंध के कारण हैं, ये कोई मेरे स्वरूप में नहीं हैं। इसप्रकार इनसे भिन्न हो जाता है। मैं तो अबंधस्वभावी हूँ– ऐसी दृष्टि और अनुभव होने पर सम्यग्दृष्टि को भान हो जाता है कि मेरी वस्तु में कोई बंधभाव नहीं है।

सम्यग्दर्शन होने पर, अबंधस्वभावी आत्मा का भान होने पर जीव मुक्त हो गया। चारित्र में मुक्ति बाकी रही; परन्तु श्रद्धा में तो अबंधस्वभाव का अनुभव हुआ, उसने बंध के विलास को दूर करके आत्मशक्ति से जगत को जीत लिया है। मैं विकल्प से लेकर सम्पूर्ण दुनिया से भिन्न, आनंदकंद आत्मा हूँ। ज्ञानी ने आनन्दकंद भगवान आत्मा का आश्रय लेकर, शक्ति का सहारा लेकर जगत को जीत लिया है। विकल्प से लेकर सम्पूर्ण दुनिया को जीत लिया है। मैं तो ज्ञान और आनन्द का कंद आत्मा हूँ। ज्ञान, आनन्द आदि अनन्त शक्ति के पिंडरूप द्रव्य दृष्टि का जोर आने पर द्रव्य में से आनंद की धारा बहती है, वह दु:ख को जीत लेती है। देखो! यह चौथे गुणस्थान की बात है, साधु की बात तो क्या कहना ?

मानुष होना मुश्किल है तो, साधु कहाँ से होय।
साधु हुआ सो सिद्ध हुआ, कहना रहा न कोय।।

क्रमशः

स्वानुभूतिदर्शन : बहिनश्री की तत्त्वचर्चा

प्रश्न :- क्या अपना अस्तित्व यथार्थरूप से ग्रहण हो तभी उसे द्रव्य-गुण-पर्याय का सच्चा ज्ञान होता है ? तथा 'सत् चिदानन्द' में 'सत्' पहले क्यों लिया है ?

समाधान :- मैं आत्मा ध्रुव शाश्वत अस्तित्ववान (सत्) एक वस्तु हूँ ऐसा ज्ञान में प्रथम निर्णय होना चाहिए। उसमें एक अस्तित्वगुण नहीं परन्तु ज्ञान-आनन्दादि अनन्त गुणों से भरपूर पूर्ण पदार्थ हूँ।

मैं एक अस्तित्ववान वस्तु हूँ अर्थात् चैतन्यरूप से मेरा अस्तित्व है, जड़रूप से नहीं।—इसप्रकार पहले ग्रहण करे कि मेरा अस्तित्व है; फिर वह पदार्थ कैसा है ? तो कहते हैं कि ज्ञान-आनन्दादि अनन्तगुणों से भरपूर है। ज्ञान-आनन्द से भरपूर मेरा अस्तित्व है; उसमें ज्ञानरूप, आनन्दरूप —ऐसे अनन्त गुणरूप से मेरा अस्तित्व एकसाथ आ जाता है। इस प्रकार जगत में सर्व वस्तुएँ सत् हैं।

आत्मा का अस्तित्व ही न हो तो ज्ञान-आनन्दादि समस्त गुण किसमें होंगे ? यदि वस्तु का अस्तित्व हो तो उसमें गुण हों, परन्तु जिसका अस्तित्व ही न हो उसमें गुण किस प्रकार हों ? यदि शाश्वत वस्तु ही नहीं तो ज्ञान और आनन्द रहेंगे किसमें ? वेदन होगा किसमें ?

अनन्त काल बीत गया, अनन्त जन्म-मरण किये परन्तु ज्ञायक का अस्तित्व तो ज्ञायकरूप ही रहा है। वह निगोद-नरक में गया, किसी भी क्षेत्र में रहा और चाहे जैसे उपसर्ग-परीषह आये, परन्तु चेतन का अस्तित्व चेतनरूप ही रहा है; उसका नाश नहीं होता। ज्ञायक का ज्ञायकरूप अस्तित्व कभी नहीं छूटता, नष्ट नहीं होता, वह उसका भाव है—ऐसी अस्तित्व की महिमा है। और उसका ग्रहण होने पर द्रव्य-गुण-पर्याय सबका ज्ञान एकसाथ हो जाता है।

मुमुक्षु : पदार्थ में ज्ञान और आनन्द कहने से उसमें भाव दिखायी देता है, परन्तु सत् कहने से उसमें कोई भाव दिखायी नहीं देता ?

बहिनश्री : आनन्द में वेदन और ज्ञान में जानने का गुण (स्वभाव) है, इसलिए वे भाव से भरे हुए लगते हैं, वैसे ही अस्तित्व भी रूखा और खाली नहीं

है, वह ज्ञान-आनन्दादि अनन्त गुणों से भरा हुआ अस्तित्व है।

जैसे अग्नि में उष्णता गुण है और पानी में शीतलता गुण है तो उसके गुणों से वे अन्य को पकड़ने में आता है; उसी प्रकार आत्मा ज्ञायक स्वरूप है; ज्ञायक का अस्तित्व धारण करे वह आत्मा है और जो जानता नहीं वह जड़ है। इस प्रकार दोनों (अपने-अपने) गुणों से पकड़ में आते हैं। (ग्रहण होते हैं।)

प्रश्न :- आत्मा का स्वरूप बोलने में जितना सहज लगता है, उतनी सहजता से हमें प्राप्त हो सकता है ?

समाधान :- स्वभाव सहज है; परन्तु अनादि से विभाव में पड़ा हुआ है, इसलिये सहज नहीं दिखता। उसके ज्ञान, आनन्द, अस्तित्व, वस्तुत्व आदि सर्व गुण अनादि-अनन्त सहज हैं; वैसे ही वस्तु भी स्वयं सहज है, किसी ने बनायी नहीं है। जो स्वभाव हो वह सहज होता है, तथा अपने स्वभाव में जाना वह भी सहज है; परन्तु परपदार्थ को अपना बनाना वह अशक्य है। जड़ और चेतन अपना कार्य भिन्न-भिन्न करते रहते हैं। जड़ अपना नहीं होता। कहाँ से हो ? क्योंकि जड़ और चेतन दोनों जुदे हैं, और जुदे हों वे एक कहाँ से हों ? इस प्रकार जड़ अपना नहीं होता। किन्तु चैतन्य को—अपने को ग्रहण करके अपनेरूप होना वह सहज है। अपने स्वभावरूप से परिणमना वह सहज है। जैसे पानी शीतल है उसे शीतलतारूप परिणमना वह सहज है। पानी अग्नि के निमित्त से ऊष्ण हुआ, परन्तु उसका शीतल होना सहज है, क्योंकि वह पानी का स्वभाव होने से अग्नि से पृथक् होने पर शीतल हो ही जाता है, किन्तु पानी को ज्यों का त्यों ऊष्ण रखना वह अशक्य है। उसी प्रकार अनन्त काल बीता तथापि जीव शरीररूप नहीं हुआ, उस रूप होना अशक्य है, क्योंकि वह परपदार्थ है; उसके साथ रहे तो भी जड़रूप नहीं होता। आत्मा अपनी ओर झुके, ज्ञायक को ग्रहण करे तो अल्पकाल में ही स्वानुभूति एवं केवलज्ञान प्रगट होता है, क्योंकि वह अपना स्वभाव है; उसके लिये अनन्त काल की आवश्यकता नहीं है। परपदार्थों को अपना बनाने में अनन्त काल व्यतीत हुआ, तथापि अपने हुए नहीं। जबकि अपने को ग्रहण करने में अनन्त काल लगता ही नहीं, असंख्य समय में ही केवलज्ञान की प्राप्ति होती है, इसलिए अपने को ग्रहण करना, अपनी प्राप्ति करना वह सहज है। **क्रमशः**

....गतांक से आगे

प्रथमानुयोग

तीर्थधाम चिदायतन

हस्तिनापुर का अतिशयकारी इतिहास

धार्मिक नगरी हस्तिनापुर का वर्णन उत्तरपुराण से

यदि उनके कान समस्त शास्त्रों की पात्रता को प्राप्त थे तो उनका वर्णन ही नहीं किया जा सकता क्योंकि संसार में यही एक बात दुर्लभ है। शोभा तो दूसरी जगह भी हो सकती है। 'ये भगवान्, सबको जीतनेवाले मोहरूपी मल्ल को जीतेंगे इसलिए ऊँची नाक इन्हीं में शोभा दे सकेगी' ऐसा विचारकर ही मानो विधाता ने उनकी नाक कुछ ऊँची बनाई थी। उनके मुख से उत्पन्न हुई सरस्वती विनोद से कुछ लिखेगी यह विचार कर ही मानो विधाता ने उनके कपोलरूपी पटिये चिकने और चौड़े बनाये थे। उनके सफेद चिकने सघन और एक बराबर दाँत यही शंका उत्पन्न करते थे कि क्या ये सरस्वती के मन्द हास्य के भेद हैं अथवा क्या शुद्ध अक्षरों की पंक्ति ही हैं। बरगद का पका फल, विम्बफल और मूंगा आदि दूसरों के ओठों की उपमा भले ही हो जावें परन्तु उनके ओठ की उपमा नहीं हो सकते इसीलिए इनका अधर—ओंठ अधर—नीच नहीं कहलाता था। अन्य लोगों का चिबुक तो आगे होनेवाली दाढ़ी के ढक जाता है परन्तु इनका चिबुक सदा दिखाई देता था, इससे जान पड़ता है कि वह केवल शोभा के लिए ही बनाया गया था। चन्द्रमा क्षयी है तथा कलंक से युक्त है और कमल कीचड़ से उत्पन्न है तथा रज से दूषित है इसलिए दोनों ही उनके मुख की सदृशता नहीं धारण कर सकते। यदि उनके कण्ठ से दर्पण के समान सब पदार्थों को प्रकट करनेवाली दिव्यध्वनि प्रकट होगी तो फिर उस कण्ठ की सुकण्ठता का अलग वर्णन क्या करना चाहिए? वे त्रिलोकीनाथ ऊँचाई के द्वारा शिर के साथ स्पर्धा करनेवाले अपने दोनों कन्धों से ऐसे सुशोभित होते थे मानो तीन शिखरोंवाला सुवर्णगिरि ही हो। घुटनों तक लम्बी एवं केयूर आदि आभूषणों से विभूषित उनकी दोनों भुजाएँ बहुत ही अधिक सुशोभित हो रही थीं और ऐसी जान पड़ती थीं मानो पृथ्वी को उठाना ही चाहती हों।

बहुत-सी लक्ष्मियाँ एक-दूसरे की बाधा के बिना ही इसमें निवास कर सकें, यह सोचकर ही मानो विधाता ने उनका वक्ष:स्थल बहुत चौड़ा बनाया था। जिसके मध्य में मणियों की कान्ति से सुशोभित हार पड़ा हुआ है ऐसा उनका वक्ष:स्थल, जिसके मध्य में संध्या के लाल-लाल बाल पड़ रहे हैं, ऐसे हिमाचल के तट के समान जान पड़ता था। मुट्ठी में समाने योग्य उनका मध्यभाग चूंकि उपरिवर्ती शरीर के बहुत भारी बोझ को बिना किसी आकुलता के धारण करता था, अत: उसका पतलापन ठीक ही शोभा देता था। उनकी नाभि चूँकि गम्भीर थी, दक्षिणावर्त से सहित थी। अभ्युदय को सूचित करनेवाली थी, पद्मचिह्न से सहित थी और मध्यस्थ थी अत: स्तुति का स्थान—प्रशंसा का पात्र क्यों नहीं होती ? अवश्य होती। करधनी को धारण करनेवाली उनकी सुन्दर कमर बहुत ही अधिक सुशोभित होती थी और जम्बूद्वीप की वेदीसहित जगती के समान जान पड़ती थी। उनके उरु केले के स्तम्भ के समान गोल, चिकने तथा स्पर्श करने पर सुख देनेवाले थे अन्तर केवल इतना था कि केले के स्तम्भ एक बार फल देते हैं परन्तु वे बारबार फल देते थे और केले के स्तम्भ बोझ धारण करने में समर्थ नहीं हैं परन्तु वे बहुत भारी बोझ धारण करने में समर्थ थे। चूंकि उनके घुटनों ने उरु और जंघा दोनों के बीच मर्यादा कर दी थी—दोनों की सीमा बाँध दी थी इसलिए वे सत्पुरुषों के द्वारा प्रशंसनीय थे सो ठीक ही है क्योंकि जो अच्छा कार्य करता है, उसकी प्रशंसा क्यों नहीं की जावे ? अवश्य की जावे। उनके चरणकमल समस्त इन्द्रों को नमस्कार कराते थे तथा लक्ष्मी उनकी सेवा करती थी। जब उनके चरणकमलों का यह हाल था तब जंघाएँ तो उनके ऊपर थीं इसलिए उनका और वर्णन क्या किया जाये ? जिस प्रकार मन्त्र में गूढ़ता गुण रहता है, उसी प्रकार उनके दोनों गुल्फों—एड़ी के ऊपर की गांठों में गूढ़ता गुण रहता था परन्तु उनकी यह गुणता फल देनेवाली थी सो ठीक ही है क्योंकि सभी पदार्थ फलदायी होने से ही गुणी कहलाते हैं।

(श्लोक, 423 से 441 तक) **क्रमश:**

करणानुयोग

जानिये, अघातिया कर्मों की 101 प्रकृतियाँ

गोत्रकर्म की दो— 1. ऊँच, 2. नीच।

वेदनीयकर्म की दो— 1. साता वेदनीय, 2. असाता वेदनीय ?

आयुकर्म की चार— 1. तिर्यंचायु, 2. नरकायु, 3. मनुष्यायु, 4. देवायु।

नामकर्म की तेरानवे —

चार गति कर्म— 1. तिर्यंच, 2. नरक, 3. मनुष्य, 4. देव।

पाँच इन्द्रिय कर्म— 1. एकेन्द्रिय, 2. द्वीन्द्रिय, 3. त्रिइन्द्रिय, 4. चतुरिन्द्रिय, 5. पंचेन्द्रिय।

पाँच शरीर कर्म— 1. औदारिक, 2. वैक्रियिक, 3. आहारक, 4. तेजस, 5. कार्माण।

तीन आंगोपांग कर्म— 1. औदारिक, 2. वैक्रियिक, 3. आहारक।

एक निर्माण कर्म—

पाँच बंधन कर्म— 1. औदारिक बंधन, 2. वैक्रियिक बंधन, 3. आहारक बंधन, 4. तैजस बंधन, 5. कार्माण बंधन

पाँच संघात कर्म— 1. औदारिक, 2. वैक्रियिक, 3. आहारक, 4. तैजस, 5. कार्माण।

छह संस्थान कर्म— 1. समचतुरस्र संस्थान, 2. न्यग्रोध परिमंडल संस्थान, 3. स्वाति संस्थान, 4. कुब्जक संस्थान, 5. वामन संस्थान, 6. हुंडक संस्थान।

छह संहनन कर्म— 1. वज्रवृषभनाराच संहनन, 2. वज्रनाराच संहनन, 3. नाराच संहनन,

4. अर्धनाराच संहनन, 5. कीलक संहनन,
6. असम्प्राप्ता सृपाटिका संहनन।

पाँच वर्ण कर्म— 1. कृष्ण, 2. नील, 3. लाल, 4. पीत,
5. श्वेत।

दो गन्ध कर्म— 1. सुगन्ध, 2. दुर्गन्ध।

पाँच रस कर्म— 1. खट्टा, 2. मीठा, 3. कड़वा, 4. कसैला,
5. चरपरा।

आठ स्पर्श कर्म— 1. कठोर, 2. कोमल, 3. हल्का, 4. भारी,
5. ठंडा, 6. गर्म, 7. चिकना, 8. रूखा।

चार आनुपूर्व्य कर्म— 1. तिर्यंच, 2. नरक, 3. मनुष्य, 4. देव।

एक अगुरुलघुकर्म, एक उपघात कर्म, एक परघात कर्म, एक आताप कर्म, एक उद्योत कर्म।

दो विहायोगति कर्म— 1. मनोज्ञ, 2. अमनोज्ञ।

एक उच्छ्वास कर्म,	एक त्रस कर्म,
एक स्थावर कर्म,	एक बादर कर्म,
एक सूक्ष्म कर्म,	एक पर्याप्त कर्म,
एक अपर्याप्त कर्म,	एक प्रत्येक नामकर्म,
एक साधारण नामकर्म,	एक स्थिर नामकर्म,
एक अस्थिर नामकर्म,	एक शुभ नामकर्म,
एक अशुभ नामकर्म,	एक सुभग नामकर्म,
एक दुर्भग नामकर्म,	एक सुस्वर नामकर्म,
एक दु:स्वर नामकर्म,	एक आदेय नामकर्म,
एक अनादेय नामकर्म,	एक यश:कीर्ति नामकर्म,
एक अयश:कीर्ति नामकर्म,	एक तीर्थंकर नामकर्म।

पंडित सदासुखजी : परिचय

19 वीं शताब्दी के जैन साहित्य सेवियों में पंडित सदासुखजी कासलीवाल का नाम विशेषतय: उल्लेखनीय है। आपका जन्म सं. 1852 के लगभग जयपुर में डेडराज के वंश में हुआ। आपके पिता का नाम दुलीचंद तथा गोत्र कासलीवाल था। इस समय भी आपके मकान में डेडीको का चैत्यालय अवस्थित है। अर्थ प्रकाशिका में स्वयं आपने अपने संबंध में निम्न प्रकार से उल्लेख किया है –

डेडराज के वंश माहि, इक किंचित ज्ञाता।
दुलीचंद का पुत्र, काशलीवाल विख्याता।।
नाम सदासुख कहे, आत्म सुख का बहु इच्छुक।
सो जिनवाणी प्रसाद, विषय ते भए निरिच्छुक।।

आपके बाल्यजीवन की घटनाओं का कोई परिचय नहीं मिलता है। किंतु इतना अवश्य है कि आप बचपन से ही जिनवाणी के पठन-पाठन में विशेष रुचि रखते थे। आप सरल चित्त वृत्ति के थे। सेवा भाव आपका स्वभाव बन गया था। आध्यात्मिक एवं सैद्धांतिक चर्चाओं में अपना समय आप अधिक व्यतीत करते थे। आप पर आपके गुरु पंडित मुन्नालालजी सांगा का तथा उनके गुरु पंडितप्रवर श्री जयचंदजी छाबड़ा के विचारों का विशेष प्रभाव पड़ा था। इसी कारण आपके पूर्वज बीस पंथ के अनुयायी होते हुए भी आपने तेरह पंथ आम्नाय को ही अपनाया। आपने भट्टारकों द्वारा प्रचारित शिथिलाचार का डटकर विरोध किया, जिसका कि वर्णन हमें उनकी रत्नकरण्ड श्रावकाचार की विस्तृत टीका में जगह-जगह मिलता है।

आप पूर्ण संतोषी थे। अर्थोपार्जन के पीछे कभी नहीं पड़ते थे जो कुछ आपको मिलता था, उसमें अपना तथा अपने परिवार का निर्वाह कर लेते थे। एक किंवदंती के अनुसार जब महाराज माधोसिंहजी ने अपनी तनख्वाह बढ़ाने के लिए कहा तो आपने उनसे यही निवेदन किया कि महाराज आप मेरी तनख्वाह न बढ़ाकर आप मुझे 1-2 घण्टे पहले जाने दें, जिसमें मैं अपनी आत्मसाधना आदि कर सकूं। इस बात को सुनकर महाराज भी आश्चर्य करने लगे तथा उनसे कहा कि अब आप दो घंटे पहले जा सकते हैं तथा आपकी तनख्वाह भी बढ़ा दी जाती है।

आप प्रतिदिन प्रात: बड़े मंदिर तथा मारूजी के मंदिर में तथा सायं छोटे दीवानजी के मंदिर में स्वाध्याय एवं शास्त्र प्रवचन करते थे। **आपकी भाषण शैली इतनी सरल एवं मृदु होती थी कि श्रोतागण आपके प्रवचन को मंत्रमुग्ध होकर श्रवण करते थे।** यदि कोई शंका करता तो आप उसका समाधान इस प्रकार करते थे कि प्रश्नकर्त्ता पुन: उस प्रश्न के प्रति शंका करने की आवश्यकता नहीं समझता था।

आपके अनेक शिष्य थे और वे आपकी प्रेरणा तथा अध्ययन अध्यापन की सुविधा से सुयोग्य विद्वान् बने। उनमें प्रमुख पंडित पन्नालालजी संघी, नाथूलालजी दोसी, पंडित पारसदासजी निगोत्या तथा सेठ श्री मूलचंदजी सोनी के नाम उल्लेखनीय हैं।

आपके संबंध में पंडित पारसदासजी निगोत्या ने अपनी ज्ञान सूर्योदय नाटक की टीका में जो उल्लेख किया है, वह निम्न प्रकार है।

लौकिक प्रवीना तेरह पंथ मांही लीना
मिथ्या बुद्धि करि छीना जिन आतम गुण चीना है।।
पढै ओ पढावे मिथ्या अलट कूं कढावे।
ज्ञान दान देय जिन मारग बढावे है।।
दीसै घरवासी रहे घर हूँ तैं उदासी।
जिन मारग प्रकासी जाकी कीरती जगभासी है।।
कहां लौ कही जे गुण सागर सदासुख जू के।
ज्ञानामृत पीव बहु मिथ्या तिसनासी है।।
जिनवर प्रणीत जिन आगम में समदृष्टि।
जाको जस गावत अघावत नहीं सृष्टि है।।
संशय तम भान संतोष सर मान रहै।
सांचो निजपर स्वरूप भाषत अभीष्ट है।।
ज्ञान दान बढत अमोघ छ पहर जाके।
आसा की वासना मिटाई गुण इष्ट तें।।
सुखिया सदीव रहै ऐसे गुण दुर्लभ मिले।
पारस आजमाई सदा सुख जू परिदिष्टि तें।।

उपरोक्त पद्य से हमें पंडितजी के संपूर्ण जीवन की झाँकी मिलती है।

वस्तुत: पंडितजी जैसे विद्वान उस समय बहुत कम थे। आपका संपूर्ण जीवन समाज सेवा, ग्रंथ रचना आदि में व्यतीत हुआ। किंतु विशेषता जो आपने प्राकृत व संस्कृत ग्रंथों की भाषा टीका के रूप में समाज को अमूल्य निधि प्रदान की उसके लिए सारा समाज आपके प्रति सदा उपकृत रहेगा। आपने भगवती आराधना, तत्वार्थसूत्र लघु टीका, नाटक समयसार, अकलंक स्तोत्र, मृत्यु महोत्सव, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, अर्थ प्रकाशिका और नित्य नियम पूजा संस्कृत आदि की भाषा टीकाएँ की हैं। इनमें तत्त्वार्थसूत्र की अर्थ प्रकाशिका टीका, रत्नकरण्ड श्रावकाचार की भाषा वचनिका, भगवती आराधना की भाषा टीका आदि विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं। ये सभी ग्रंथ आपकी गंभीर विद्वत्ता की ओर संकेत करते हैं।

पंडितजी का जीवन सं. 1921 तक सुख एवं शांति के साथ व्यतीत हुआ किंतु दैव को यह सदा के लिए मंजूर नहीं था। उनके 20 साल का इकलौते पुत्र श्री गणेशीलाल का असमय में ही निधन हो गया। उन्होंने अपने इस पुत्र को सब प्रकार से योग्य एवं विद्वान बना दिया था। तथा परिवार का भार भी उसके कन्धे पर डालना चाहते थे तथा आप गृह के सब कामों से निवृत होकर समाज एवं साहित्य सेवा में शेष जीवन बिताना चाहते थे कि अचानक दैव ने ऐसा वज्रप्रहार किया कि वे उसे सह न सके। उनका चित्त उदास सा रहने लगा कि इस बीच अजमेर निवासी सेठ मूलचंदजी ने आपको सांत्वना दी तथा अपने साथ अजमेर ले गये। वहाँ वे अपना समय स्वाध्याय एवं साहित्य रचना में व्यतीत करने लगे।

जब आपको अपना अंत समय निकट दिखाई दिया तो अपने शिष्य पंडित पन्नालाल संघी व भंवरलालजी सेठी को अजमेर बुलाकर कहा कि मैंने तथा मेरे पूर्ववर्ती विद्वानों ने जो साहित्य सृजन किया है, उसका अभी देश देशांतर में यथेष्ट रूप से प्रचार नहीं हुआ है, तुम इस कार्य को आगे बढ़ाना तथा प्राकृत, संस्कृत के अध्ययन एवं अध्यापन के लिए एक पाठशाला की स्थापना करना। इस कार्य के लिए मैं तुम्हें सर्वथा योग्य एवं उपयुक्त समझता हूँ।

अंत समय में आपने समाधिपूर्वक अपनी देह का त्याग किया। पंडित सदासुखजी आचार्यकल्प पंडित टोडरमलजी के अत्यधिक प्रशंसक थे और उन्हीं के जीवन एवं साहित्य से सदा प्रेरणा लिया करते थे। टोडरमल द्विशताब्दी समारोह पर मैं इन सभी विद्वानों का हृदय से अभिनंदन करता हूँ।●●

साभार - आत्मधर्म (टोडरमलांक), 1967

करणानुयोग

श्रुत परम्परा एवं श्रुतज्ञान का स्वरूप

इस तरह अपने मन-वचन-काय से वह भगवान का गुणानुवाद करते हुए उनके प्रति अपनी असीम श्रद्धा व्यक्त करके अपने को तन्मय करता है। वह तन्मयता ही उसे मोहविजयी बनाती हैं, क्योंकि शुद्धात्मा के गुणों में जो अनुराग होता है, वह सांसारिक राग-द्वेष का उन्मूलक होता है।

आगे पंच नमस्कार मंत्र को परम मंगल और उसके जप को उत्कृष्ट स्वाध्याय बतलाते हैं—

पैंतीस अक्षरों के पंच नमस्कार मंत्र की वाचनिका व मानसिक जप करनेरूप उपासना से प्राणियों का पूर्वबद्ध तथा आगामी समस्त पाप नष्ट होता है तथा अभ्युदय और कल्याण को करनेवाले पुण्य को लाता है इसलिए यह मंगलों में उत्कृष्ट मंगल है तथा उसका जप उत्कृष्ट स्वाध्याय रूप तप है।

विशेषार्थ - मंगल शब्द की निरुक्ति धवला के प्रारम्भ में इस प्रकार की है—

मलं गालयति विनाशयति घातयति दहति हन्ति विशोधयति विध्वंसयतीति मङ्गलम्।

जो मल का गालन करता है, विनाश करता है, जलाता है, घात करता है, शोधन करता है या विध्वंस करता है, उसे मंगल कहते हैं। उपचार से पाप को भी मल कहा है। उसका गालन करता है, इसलिए पण्डितजन उसे मंगल कहते हैं।

दूसरी व्युत्पत्ति के अनुसार मंग शब्द का अर्थ सुख है, उसे जो लाये, वह मंगल है। कहा है—यह मंग शब्द पुण्यरूप अर्थ का कथन करता है, उसे लाता है, इसलिए मंगल के इच्छुक सत्पुरुष मंगल कहते हैं। पंच नमस्कार मंत्र की वाचनिका या मानसिक जप से समस्त संचित पाप का

नाश होता है और आगामी पाप का निरोध होता है तथा सांसारिक ऐश्वर्य और मोक्षसुख की भी प्राप्ति होती है, इसलिए इसे मंगलों में भी परम मंगल कहा है।

आप्तपरीक्षा के प्रारम्भ में स्वामी विद्यानन्द ने परमेष्ठी के गुणस्तवन को परम्परा से मंगल कहा है, क्योंकि परमेष्ठी के गुणों के स्तवन से आत्मविशुद्धि होती है। उससे धर्म विशेष की उत्पत्ति और अधर्म का प्रध्वंस होता है। पंच नमस्कार मंत्र में पंच परमेष्ठी को ही नमस्कार किया गया है। उस मंत्र का जप करने से पाप का विनाश होता है और पुण्य की उत्पत्ति होती है। पापों का नाश करने के कारण ही उसे प्रधान मंगल कहा है।

कहा है — यह पंच नमस्कार मंत्र सब पापों का नाशक है और सब मंगलों में प्रथम मंगल है।

इसके साथ नमस्कार मंत्र का जाप करना स्वाध्याय भी है। कहा भी है—पंच नमस्कार मंत्र का जाप अथवा एकाग्रचित्त से जिनेन्द्र भगवान के द्वारा प्रतिपादित शास्त्र का पढ़ना परम स्वाध्याय है।

आगे कहते हैं कि अर्हन्त के ध्यान में तत्पर मुमुक्षु का आशीर्वाद रूप और शान्ति आदि रूप मंगल वचन कल्याणकारी होता है। जो साधु प्रधानरूप से अर्हन्त के ध्यान में तत्पर रहता है, उसके 'अर्हंत तुम्हारा कल्याण करें' या तुम्हें सदा शान्ति प्राप्त हो, इत्यादि रूप भी स्वाध्याय कल्याणकारी माना गया है।

विशेषार्थ—'भी' शब्द बतलाता है कि केवल वाचना आदि रूप स्वाध्याय ही कल्याणकारी नहीं है, किन्तु जो साधु निरन्तर अर्हन्त के ध्यान में लीन रहता है, उसके आशीर्वाद रूप वचन, शान्तिपरक वचन और जयवाद रूप वचन भी स्वाध्याय है। शान्ति का लक्षण इस प्रकार है—सुख और उसके कारणों की सम्यक् प्राप्ति तथा दुःख और उसके कारणों का निवारण तथा इसी तरह सुख के कारणों के भी कारणों की प्राप्ति और दुःख के कारणों के भी कारणों की निवृत्ति को शान्ति कहते हैं। अर्थात् जिन

वचनों से सुख और उसके कारणों के भी कारण प्राप्त होते हैं तथा दु:ख, उसके कारण और दु:ख के कारणों के भी कारण दूर होते हैं, ऐसे शान्ति रूप वचन भी स्वाध्यायरूप है।

जयवादरूप वचन इस प्रकार के होते हैं—'समस्त सर्वथा एकान्त नीतियों को जीतनेवाले, सत्य वचनों के स्वामी तथा शाश्वत् ज्ञानानन्दमय जिनेश्वर जयवन्त हो।'

पूजन के प्रारम्भ में जो स्वस्ति पाठ पढ़ा जाता है, वह स्वस्ति वचन है। जैसे तीनों लोकों के गुरु जिनश्रेष्ठ कल्याणकारी हों, इस तरह के वचनों को पढ़ना भी स्वाध्याय है।

सारांश यह है कि नमस्कार मंत्र का जाप, स्तुति पाठ आदि भी स्वाध्याय रूप है, क्योंकि पाठक मन लगाकर उनके द्वारा जिनदेव के गुणों में ही अनुरक्त होता है। जिन शास्त्रों में तत्त्वविचार या आचार विचार है, उनका पठन-पाठन तथा उपदेश तो स्वाध्याय है ही।

इस प्रकार स्वाध्याय का स्वरूप है। **क्रमशः**

षट्खण्डागम ग्रन्थ की वाचना अनवरत प्रवाहित

तेरहवीं पुस्तक की वाचना 11 नवम्बर 2023 से प्रारम्भ

विद्वत् समागम - आदरणीय बालब्रह्मचारिणी कल्पनाबेन, जयपुर एवं सहयोगी भाई-बहिनों तथा मङ्गलायतन परिवार का भी लाभ प्राप्त होता है।

दोपहर	01.30 से 03.15 तक (प्रतिदिन)	**षट्खण्डागम (धवलाजी)**
रात्रि	07.30 से 08.30 बजे तक	मूलाचार ग्रन्थ का स्वाध्याय
	08.30 से 09.15 बजे तक	**समयसार ग्रन्थाधिराज के कलशों का व्याकरण के नियमानुसार शुद्ध उच्चारण सहित सामान्यार्थ**

नोट—इस कार्यक्रम में आप ZOOM ID-9121984198,
Password - tm@4321
- youtube channel - theerthdham mangalayatan

के माध्यम से भी शामिल हो सकते हैं।

"जिस प्रकार–उसी प्रकार" में छिपा रहस्य

जिस प्रकार– चंदन के पेड़ पर लटके सांप और अजगर, गरूड़ या मोर की आवाज सुनकर तुरंत भाग जाते है।

उसी प्रकार– मिथ्यात्व रूपी अजगर व राग–द्वेष रूपी सांप ज्ञायक स्वभाव का आश्रय लेते ही ढ़ीले पड़कर आत्मा से अलग हो जाते है।

जिस प्रकार– चन्दन को कचरे के ढ़ेर में डाले, कुल्हाड़ी से काटे तो चन्दन अपना स्वभाव नहीं छोड़ता सुगन्ध ही बिखेरता है।

उसी प्रकार– आत्मा में चाहे जितनी प्रतिकूलता का संयोग प्राप्त हो तो भी वह अपने ज्ञाता दृष्टा स्वभाव को नहीं छोड़ता है।

जिस प्रकार– रत्न दीपक स्वयं प्रकाशवान होने से प्रचंड पवन आदि से भी नहीं बुझता है।

उसी प्रकार– आत्मा स्वयं प्रकाशवान होने के कारण प्रतिकूलताओं में भी नष्ट नहीं होता।

जिस प्रकार– किसी स्कूटर अथवा कार की मात्र चाबी लेने से काम नहीं बनता। ये सीखना पड़ता है चाबी कैसे लगायी जाये।

उसी प्रकार– शास्त्रों में दिये गये कथनों के अर्थ करने की पद्धति सीखे बिना आचार्यों का अभिप्राय समझ में नहीं आ सकेगा।

जिस प्रकार– कपड़े के अनुसार शरीर नहीं बदला जाता, शरीर के अनुसार कपड़ो की फिटिंग की जाती है।

उसी प्रकार– शास्त्रों के अनुसार अर्थात् वस्तु स्वभाव के अनुसार अपना अभिप्राय बनाना पड़गा, अपनी मान्यता के अनुसार शास्त्रों का अर्थ नहीं होता।

जिस प्रकार– किसी बीमारी का ऑपरेशन करने से पहले डॉक्टर बी.पी. को सामान्य करने के लिए दवा देता है। मात्र बी.पी. की दवा खा लेने से बीमारी नहीं टल जाती है।

उसी प्रकार– मिथ्यात्व रूपी बीमारी के ऑपरेशन से पहले तीव्र पापों / व्यसनों में फँसे जीवों को इन्हें छोड़ने को कहा जाता है। मात्र पापों के छोड़ देने से मिथ्यात्व नहीं मिट जाता। मिथ्यात्व तो तत्त्व निर्णय, भेद विज्ञान पूर्वक आत्मरूचि होने पर ही मिटेगा।

जिस प्रकार– चक्ररत्न आयुधशाला में प्रगट हो जाने पर चक्रवर्ती को छह खण्डों पर विजय प्राप्त होती ही है।

उसी प्रकार– जिसे सम्यग्दर्शनरूपी चक्ररत्न की प्राप्ति हो गयी है वह अल्प काल (दो–चार भव) में मुनि–अरहंत–सिद्ध बने ही बनेगा।

क्रमशः संकलन – प्रो० पुरुषोत्तमकुमार जैन, रुड़की

समाचार-दर्शन

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

तीर्थधाम मङ्गलायतन : वीर निर्वाण के अवसर पर **दिनांक शनिवार, 11 नवम्बर से मंगलवार, 14 नवम्बर 2023 तक श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ़ एवं श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन** के संयुक्त तत्त्वावधान में तीर्थधाम मङ्गलायतन में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ।

दैनिक कार्यक्रमों में प्रात: 5.45 से 6.30 तक प्रौढ़ कक्षा ब्रह्मचारी सुकुमाल झांझरी, उज्जैन द्वारा, 6.45 से 8.30 तक प्रक्षाल-पूजन-विधान प्राप्त; 9.30 से 10.00 तक पूज्य गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन; 10.15 से 11.00 डॉ. राकेश जैन, नागपुर द्वारा बोधपाहुड़ पर स्वाध्याय तत्पश्चात् 11.00 से 11.45 तक पण्डित संजय जैन, जेवर; दोपहर 1.30 से 2.30 तक बालब्रह्मचारिणी कल्पनाबेन द्वारा वाचना और 2.45 से 4.15 तक गोष्ठी प्रवचनसार / पंचास्तिकाय संग्रह, समयसार, अष्टपाहुड़ पंच परमागम के विषयों पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। सायंकाल 6.00 से 6.45 जिनेन्द्रभक्ति; 6.50 से 7.45 बजे तक पण्डित जे.पी. दोशी द्वारा भगवान महावीर का निर्वाण कल्याणक; 8.00 से 9.00 डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली द्वारा प्राकृत भाषा के प्रचार-प्रसार विषय पर व्याख्यान हुए। प्रतिदिन रात्रि 9.00 से 9.45 तक अनेक ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

दिनांक 11 नवम्बर को प्रात: शोभायात्रा के साथ गाजते-बाजते शिविर उद्घाटन समारोह का **ध्वजारोहण** - श्रीमान सुनील जैन परिवार, इटारसी; **विधान आमन्त्रण कर्ता** - श्रीमान अभय जैन परिवार, इटारसी, मङ्गलार्थी अमन जैन द्वारा एवं **शिविर उद्घाटन सभा के अध्यक्ष** - श्री वीरेन्द्र जैन, उज्जैन एवं **शिविर उद्घाटनकर्त्री** - श्रीमती नीपा जैन परिवार, यू.एस.ए. के करकमलों द्वारा सानन्द सम्पन्न हुआ। शिविर का परिचय पण्डित नगेश जैन, पिड़ावा द्वारा दिया गया।

इस शिक्षण शिविर में देश के अनेकानेक **विद्वान** डॉ. राकेश जैन, नागपुर; पण्डित जे. पी. दोशी, मुम्बई; श्री नगेश जैन, पिड़ावा; डॉ. योगेशचन्द्र जैन, अलीगंज; बालब्रह्मचारी सुकुमाल झांझरी, उज्जैन; बालब्रह्मचारिणी कल्पनाबेन; ब्रह्मचारिणी पुष्पलता जैन; ब्रह्मचारिणी समताबेन; ब्रह्मचारिणी ज्ञानधाराबेन आदि का मंगल सान्निध्य प्राप्त हुआ।

इस शिविर में श्री रत्नत्रय विधान, पण्डित संजय शास्त्री, जेवर, कोटा; पण्डित दिव्यांशु शास्त्री अलवर; मंगलार्थी समकित जैन द्वारा सम्पन्न कराये गये।

इसी अवसर पर तीर्थधाम मङ्गलायतन द्वारा प्रकाशित 'छहढाला' का नवीन संस्करण और डॉ. योगेशचन्द्र जैन, अलीगंज द्वारा लिखित पुस्तक 'ईश्वर की अवधारणा : एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण' एवं आचार्य अमितगति विरचित 'अमितगति श्रावकाचार' वचनिकाकार पण्डित भागचन्द छाजेड़ की वचनिका का, बालब्रह्मचारिणी कल्पनाबेन द्वारा अनुवादित अमितगति श्रावकाचार का भी विमोचन किया गया।

13 नवम्बर वीर निर्वाण की पावन बेला पर प्रात:काल श्रीजी की शोभायात्रा सहित तीर्थधाम मङ्गलायतन स्थित कैलाशपर्वत पर कृत्रिम पावापुरी की रचना की गयी और भगवान महावीर के प्रक्षाल पूजन सहित मोक्षकल्याणक भक्ति एवं उत्साहपूर्वक मनाया गया। प्रथम निर्वाण प्रतीक श्रीफल श्री शिवकान्त अनाकुल जैन परिवार, जसवन्तनगर द्वारा समर्पित किया गया।

पंचकल्याणक आमन्त्रण - आगामी सोनगढ़, पिड़ावा, तीर्थधाम चिदायतन में आयोजित आगामी पंचकल्याणकों का मंगल आमन्त्रण पण्डित नगेश जैन, पिड़ावा ने दिया।

इस अवसर पर देश भर के अनेकों साधर्मी भाई-बहिनों में श्री मनीष जैन, ग्वालियर; श्री धीरज जैन, कोलकाता; श्री वीरेन्द्र जैन, उज्जैन; श्री संजय जैन, गौरझामर; श्री शिवकान्त जैन, जसवन्तनगर; श्री बाबूसिंह जैन, पिड़ावा आदि विशिष्ट महानुभावों के साथ-साथ सैंकड़ों भव्य जीवों की गरिमामय उपस्थिति रही।

सांस्कृतिक कार्यक्रम—11 नवम्बर को पण्डित संजय शास्त्री जेवर द्वारा पौराणिक कथा तथा आगन्तुक सभी विद्वानों द्वारा 'जैन समाज की वर्तमान और भविष्य की समस्याओं पर परिचर्चा'; 12 नवम्बर को भजन संध्या; 13 नवम्बर को 'मिलाओ सिद्ध प्रभु को टेलीफोन' झांझरी परिवार द्वारा प्रदर्शित किया गया।

तीर्थधाम चिदायतन में वेदी शिलान्यास सानन्द सम्पन्न

हस्तिनापुर की पावन पवित्र भूमि पर स्थित तीर्थधाम चिदायतन में 15-16 नवम्बर 2023 को आयोजित चिदोत्सव भव्यता के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ ।

यह मंगल महोत्सव प्रतिष्ठाचार्य बालब्रह्मचारी पण्डित अभिनन्दन शास्त्री, बालब्रह्मचारी हेमन्तभाई गाँधी व पण्डित रजनीभाई दोशी के निर्देशन में, बालब्रह्मचारी सुमतप्रकाश जैन के सानिध्य में, पण्डित संजय जैन, जेवर के संचालन में तथा डॉ. श्री किरीटभाई गोसलिया, अमेरिका; डॉ. राकेश जैन, नागपुर; पण्डित जे. पी. दोशी, मुम्बई; पण्डित राकेश जैन, लोनी, दिल्ली; डॉ. योगेश जैन, अलीगंज; पण्डित प्रद्युम्न जैन, मुजफ्फरनगर; डॉ. मनीष जैन, मेरठ; पण्डित आलोक जैन, कारंजा; पण्डित नगेश जैन, पिड़ावा; पण्डित ऋषभ जैन, उस्मानपुर, दिल्ली; पण्डित संदीप जैन,

दिल्ली; पण्डित गणतन्त्र शास्त्री, आगरा; पण्डित अशोक लुहाडिया, पण्डित सुधीर शास्त्री, डॉ. श्री सचिन्द्र जैन व पण्डित समकित जैन, तीर्थधाम मङ्गलायतन के साथ ही अन्य गणमान्य विद्वानों के ज्ञान आलोक से प्रकाशित हुआ।

इसी समारोह में चिदेश जिनालय की मूल वेदी पर विराजमान होनेवाले मूल नायक शान्तिनाथ भगवान की 71 इंच सफेद पाषाण की धवल मनोहारी सुरम्य भाववाही प्रतिमाजी की भव्य अगवानी हजारों लोगों द्वारा की गयी।

इस चिदोत्सव में देश-विदेश के गणमान्य श्रेष्ठीजन में प्रमुख श्री हितेनभाई सेठ, मुम्बई की अध्यक्षता में, श्री अक्षयभाई दोशी, मुम्बई-स्वागत अध्यक्ष; श्री संजय दीवान, सूरत-ध्वजारोहणकर्ता; श्री देवेन्द्र जैन सर्राफ सहारनपुर-मुख्य वेदी शिलान्यासकर्ता के पदों को सुशोभित किया।

वेदी शिलान्यास महोत्सव में श्री शान्तिनाथ चिदेश जिनालय व चतुर्विंशती गन्धकुटी जिनालय में विराजित होनेवाले विशाल व मनोरम जिनबिम्बों की वेदी का शिलान्यास अत्यन्त भाव व उल्लास पूर्वक हुआ।

इस मंगल महोत्सव का विशेष आकर्षण मंगलार्थियों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम **'हस्तिनापुर की गौरव गाथा'** तथा चिदायतन के संस्थापक ट्रस्टी श्री स्वप्निल जैन द्वारा दिए गए वक्तव्य में **समाज की एकता व युवावर्ग की धर्म से विमुखता** की चिन्ता व सुझाव रहे।

अनेकों माताओं व बहनों ने अपने स्वर्ण आभूषण तुरन्त उतारकर स्वर्ण कलश के लिये प्रदान किये तथा बहुत घोषणायें की गयीं।

सम्पूर्ण उत्तरप्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, उत्तरांचल, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र व कोलकाता, गुजरात प्रान्तों से पधारे साधर्मियों ने वेदी शिलान्यास चिदोत्सव में भावपूर्वक सम्मलित होकर 1 से 6 दिसम्बर 2024 में आयोजित पंच कल्याणक महामहोत्सव में आगमन की उत्साह पूर्वक सहमति व्यक्त की। समारोह के अन्त में चिदायतन ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री अजितप्रसाद जैन दिल्ली ने आभार व्यक्त किया।

तीर्थधाम मङ्गलायतन में आमन्त्रित विशिष्ट विद्वान

तीर्थधाम मङ्गलायतन में विशेष आमन्त्रण पर पधारे विशिष्ट विद्वान् बाल-ब्रह्मचारी हेमन्तभाई गाँधी, सोनगढ़; डॉ. किरीटभाई गोसलिया, अमेरिका; श्री निखिलभाई, सोनगढ़ द्वारा भगवान आदिनाथ विद्यानिकेतन के मङ्गलार्थी छात्रों की कक्षाओं का संचालन किया गया। जिसमें समयसार बन्ध अधिकार और मोक्षमार्ग-प्रकाशक के नौवें अधिकार के माध्यम से दोनों समय स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ। एतदर्थ तीर्थधाम मङ्गलायतन परिवार दोनों विद्वानों का हृदय से आभार व्यक्त करता है।

'सहजता दिवस' पर अनेक विद्वान पुरस्कृत

जयपुर : बड़े दादा के नाम से विख्यात जैनदर्शन के सुप्रसिद्ध विद्वान अध्यात्म रत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के 91 वें जन्मदिवस के अवसर पर उनके उपकारों के स्मरण स्वरूप 'सहजता दिवस' का अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम उत्साह पूर्वक मनाया गया।

यह समारोह दिनांक 21 नवम्बर, 2023 को ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन के पावन प्रांगण में दो सत्रों में सम्पन्न हुआ। प्रात: कालीन प्रथम सत्र टोडरमल महाविद्यालय के प्राचार्य डा. शांतिकुमार पाटिल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस सत्र में अथाई समन्वय समूह के वरिष्ठ साहित्यकारों द्वारा पण्डित रतनचन्द भारिल्ल की महत्वपूर्ण कृतियों की समीक्षा की गई। ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमार गोदीका, पण्डित पीयूष शास्त्री, पूर्व जनसंपर्क अधिकारी श्री कन्हैयालाल भ्रमर आदि अनेक महानुभाव उपस्थित थे। ट्रस्ट के महामंत्री श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल ने अपने वक्तव्य के माध्यम से बड़े दादा का विशेष परिचय प्रदान किया।

समारोह में मुख्यरूप से पण्डित रतनचंद भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर के तत्त्वावधान में समाज के उदीयमान पांच व्यक्तित्वों को विभिन्न संस्थाओं द्वारा पण्डित रतनचंद भारिल्ल पुरस्कार - 2023 से सम्मानित किया गया एवं पुरस्कार स्वरूप शाल, श्रीफल व प्रशस्ति पत्र के साथ नगद राशि भी प्रदान की गई। पुरस्कृत पत्रकार महावीर टाइम्स (मा.) एवं दैनिक बिजनेस दर्पण इन्दौर के संपादक श्री हेमन्त जैन व साहित्य सृजन हेतु डॉ. सचिन्द्र शास्त्री, मंगलायतन-अलीगढ को; अ.भा.जैन पत्र संपादक संघ द्वारा तथा जिनशासन के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान हेतु पण्डित आशीष शास्त्री, टीकमगढ़ को सर्वोदय अहिंसा द्वारा पुरस्कृत किया गया। टोडरमल दिगंबर जैन सिद्धांत महाविद्यालय द्वारा अध्ययनकाल के दौरान पाठ्य व पाठ्योत्तर गतिविधियों में सक्रियता से भाग लेने हेतु पण्डित मानस शास्त्री, बांसवाड़ा एवं पण्डित मयंक शास्त्री, फुटेरा को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवकुमार गोधा, जयपुर का वीतरागी जिनशासन की प्रभावना में किए गए अकथनीय योगदानों का स्मरण करते हुए मरणोपरान्त सम्मानित किया गया।

इस प्रसंग पर देश के विभिन्न स्थानों से पधारे साहित्यकारों, पत्रकारों व महाविद्यालय के पूर्व छात्र पण्डित अनेकान्त भारिल्ल शास्त्री व पण्डित संयम शास्त्री ने अपने विचार व्यक्त किए। विद्यार्थियों की ओर से मानस जैन, बाँसवाड़ा; आर्जव माद्रप; आयुष जैन, दिल्ली; स्वयं जैन, खनियांधाना ने वक्तव्य व काव्य पाठ प्रस्तुत किया। एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित हुई, जिसका विषय दादा के व्यक्तित्व व

कृतित्व पर आधारित 'सुखी जीवन का रहस्य सहजता' था, जिसमें भी अनेकों साधर्मियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। डा. अखिल बंसल ने अथाई समन्वय समूह के साहित्यकारों द्वारा की गई साहित्य समीक्षा का विवरण प्रस्तुत करते हुए पण्डित रतनचंद भारिल्ल के साहित्यिक अवदान का उल्लेख किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि कृष्ण कल्पित ने कहा कि – सहजता शब्द जितना सहज लगता है उतना सरल नहीं है, जिस सहजता, सरलता को हम नगण्य समझते हैं, उन्हें हासिल करना कोई आसान काम नहीं है यह अपने आप में बेहद अनोखी होती हैं, लाजवाब होती हैं।

हमारा जीवन ही नहीं संपूर्ण प्रकृति भी सहजता के साथ ही संचालित होती है। प्रकृति भी जब असहज होती है तब तूफान आते हैं आपदाएं आती हैं।

उन्होंने कहा मैं इस प्रांगण के बाहर से कई बार निकला हूँ आज यहाँ आकर मेरा हृदय अत्यंत प्रसन्न हो रहा है, यहाँ जो ज्ञान का केंद्र संचालित हो रहा है वह वास्तव में सराहनीय है।

समारोह की अध्यक्षता कर रहे प्रसिद्ध व्यंग्यकार श्री संपत सरल ने कहा कि मैं यहाँ आकर अत्यंत सहज हो गया। आज सहज होने का सबसे बढ़िया तरीका है मन वचन कर्म से एक रहो। सहज होने का सबसे बढ़िया तरीका है असहज होने से बचो। यह सहजता मात्र ज्ञान से ही आ सकती है तथा प्रत्येक समय ज्ञान के अर्जन में ही व्यतीत करना चाहिए। जिसके पास ज्ञान है वह आपका आदर्श होना चाहिए महापुरुष आपके आदर्श होना चाहिए। पहले जहाँ महापुरुष हुआ करते थे आज वहाँ सेलिब्रिटी होने लगे हैं।

समस्त कार्यक्रम डॉ. शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल के निर्देशन में सम्पन्न हुए। प्रथम सत्र का संचालन पण्डित अखिल शास्त्री व द्वितीय सत्र का संचालन पण्डित जिनकुमार शास्त्री ने किया।

श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव

सोनगढ़ : पूज्य गुरुदेवश्री की साधनास्थली स्वर्णपुरी सोनगढ़ में दिनांक 19 जनवरी 2024 से 26 जनवरी 2024 तक आयोजित होनेवाले इस महामहोत्सव में आप सभी इष्ट मित्रोंसहित सादर आमन्त्रित हैं।

इस महामहोत्सव में नवनिर्मित जम्बूद्वीप में स्थित 130 जिनेन्द्र भगवन्तों, बालयति भगवन्त, प्रवचनमण्डप के तीन भगवन्त और कृत्रिम पर्वत पर बाहुबली मुनिन्द्र भगवान की भव्य मनोहारी प्रतिमा की प्रतिष्ठा होगी।

आवास के लिये सम्पर्क — 7700006347 / रजिस्ट्रेशन हेतु लिंक —

https://www.kanjiswami.org/pratishtha/registration-guidance.php

वैराग्य समाचार

उज्जैन : आ० पण्डित विमलचन्द झांझरी का देह परिवर्तन शान्तपरिणामपूर्वक हो गया है।

गुरुदेवश्री के अनन्य भक्त, वात्सल्यमूर्ति, चिन्तक, श्रेष्ठ प्रवचनकार, मालवा के गौरव, तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में अग्रणीय, उज्जैन निवासी अनेक साधर्मी को इस मार्ग में लगानेवाले, आपका जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि आपकी चौथी पीढ़ी भी गुरुदेवश्री के तत्त्वज्ञान से जुड़ी हुई है तथा जैनत्व की प्रभावना कर रही है। आपका तीर्थधाम मङ्गलायतन एवं चिदायतन के प्रति अपूर्व लगाव एवं मार्गदर्शन प्राप्त था। आपके सहयोग से ही मङ्गलायतन में प्रतिवर्ष दीपावली शिविर प्रारम्भ हुआ जो विगत 20 वर्षों से अनवरत चल रहा है। आपका सम्पूर्ण जीवन देव-शास्त्र-गुरु-धर्म के प्रति समर्पित रहा।

रुड़की : प्रो. पुरुषोत्तम जैन (पी. के. जैन, आई.आई.टी. रुड़की) का देह परिवर्तन शान्तपरिणामपूर्वक हो गया है। आप तीर्थधाम मङ्गलायतन की स्थापना से जुड़े थे। प्रत्येक शिविरों में आप पधारते थे।

तीर्थधाम मङ्गलायतन परिवार दिवंगत आत्मा के सुगतिगमन, बोधिलाभ एवं शीघ्र मुक्ति प्राप्ति की भावना भाता है।

दिसम्बर 2023 माह के मुख्य जैन तिथि-पर्व

5 दिसम्बर – मार्गशीर्ष कृष्ण 8
अष्टमी

7 दिसम्बर – मार्गशीर्ष कृष्ण 10
महावीर तप कल्याणक

11 दिसम्बर – मार्गशीर्ष कृष्ण 14
चतुर्दशी

13 दिसम्बर – मार्गशीर्ष शुक्ल 1
पुष्पदन्त जन्म-तप कल्याणक

20 दिसम्बर – मार्गशीर्ष शुक्ल 8
अष्टमी

22 दिसम्बर – मार्गशीर्ष शुक्ल 10
नमिनाथ ज्ञान कल्याणक
मल्लिनाथ जन्म-तप कल्याणक
अरनाथ तप कल्याणक

25 दिसम्बर – मार्गशीर्ष शुक्ल 14
चतुर्दशी
अरनाथ जन्म कल्याणक

26 दिसम्बर – मार्गशीर्ष शुक्ल 15
संभवनाथ जन्म-तप कल्याणक

28 दिसम्बर – पौष कृष्ण 2
मल्लिनाथ ज्ञान कल्याणक

तीर्थधाम मङ्गलायतन में आयोजित

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर की झलकियाँ

Regn. No. : DELBIL / 2001/4685 Postal regn. No. : A.L.G. / 29 / 2021-23

ऐसे होते हैं हमारे जैन मुनि महाराज!

मुनिराज को वीतरागता फली-फूली है; जिस प्रकार फूल की कली खिल उठती है, उसी प्रकार वीतरागता खिल उठी है। श्रेणिक राजा ने यशोधर मुनि के गले में मरा हुआ सर्प डाल दिया था; करोड़ों चीटियाँ शरीर पर चढ़ गयी और जगह-जगह काटा - ऐसे उपसर्ग के समय भी मुनि खेद-खिन्न नहीं हुए थे, परन्तु अन्तर में वीतरागी आनन्द में क्रीड़ा करते थे। चेलना रानी कहने लगी— **देखो! ऐसे होते हैं हमारे जैन मुनि! अन्तर आनन्द की मस्ती में उपसर्ग के प्रति उनका लक्ष्य नहीं जाता।** अन्तर में एकदम अतीन्द्रिय आनन्द की मस्ती में उपसर्ग के प्रति उनका लक्ष्य ही नहीं जाता। अन्तर में एकदम अतीन्द्रिय आनन्द की परिणति में लीन हो गये हैं। **यहाँ तो कहते हैं कि मुनिराज को प्रतिकूलता में खेद नहीं है और अनुकूलता में हर्ष नहीं है।**

(- वचनामृत प्रवचन, पृष्ठ 252)

पं. सं. : DELBIL/2001/4685

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक स्वप्निल जैन द्वारा **मङ्गलायतन** मुद्रणालय, आगरा रोड, अलीगढ़-202001 छपवाकर, 'विमलांचल', हरिनगर, अलीगढ़-202001 से प्रकाशित। **सम्पादक :** डॉ. जयन्तीलाल जैन,मङ्गलायतन वि०वि०

If undelivered please return to -

मङ्गलायतन

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, हरिनगर, आगरारोड, अलीगढ़-202001 (उ.प्र.)

Shri Adinath-Kundkund-Kahan Digamber Jain Trust

Harinagar, Agra Road, Aligarh-202001 (U.P.)

Ph. : 9997996346, 2410010/10; Fax : 2410019/22

info@mangalayatan.com www.mangalayatan.com

तीर्थधाम चिदायतन में आयोजित

वेदी शिलान्यास चिदोत्सव की झलकियाँ

(15 से 16 नवम्बर 2023 तक)

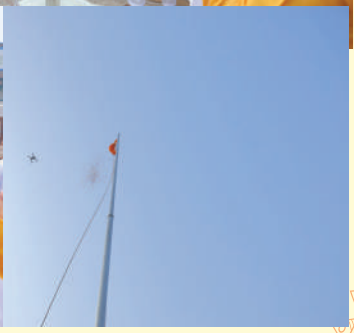

आपका हार्दिक स्वागत है।

तीर्थधाम चिदायतन
के सुरम्य वातावरण में आपका हार्दिक स्वागत है।
वेदी शिलान्यास चिदोत्सव
धवार, 15 नवम्बर से गुरुवार, 16 नवम्बर 2023 तक

वेदी शिलान्यास चिदोत्सव

तीर्थधाम चिदायतन
के सुरम्य वातावरण में आपका हार्दिक स्वागत है।

ઉપર (લિખા) હે ન પહલે ?

तीर्थधाम चिदायतन
के सुरम्य वातावरण में आपका हार्दिक